B.A. HINDI HONOURSE PART – 3

PAPER – 8

"रस"

Dr. Nand Kishore Pandit

Asst. Prof. Hindi

APSM College, Barauni

रस

रस का शाब्दिक अर्थ है **'आनन्द'।** काव्य को पढ़ने या सुनने से जिस आनन्द की अनुभूति होती है, उसे 'रस' कहा जाता है।रस का सम्बन्ध 'सृ' धातु से माना गया है। जिसका अर्थ है - जो बहता है, अर्थात जो भाव रूप में हृदय में बहता है उसी को रस कहते है।

रस को **'काव्य की आत्मा'** या **'प्राण तत्व'** माना जाता है।

रस उत्पत्ति को सबसे पहले परिभाषित करने का श्रेय **भरत मुनि** को जाता है। उन्होंने अपने **'नाट्यशास्त्र'** में आठ प्रकार के रसों का वर्णन किया है।भरतमुनि ने लिखा है- **विभावानुभावव्यभिचारी- संयोगद्रसनिष्पत्ति** अर्थात विभाव, अनुभाव तथा संचारी भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।

रस के अवयव

रस के चार अवयव या अंग हैं:-

1) स्थायी भाव

2) विभाव

3) अनुभाव

4) संचारी या व्यभिचारी भाव

स्थायी भाव

स्थायी भाव का मतलब है प्रधान भाव। प्रधान भाव वही हो सकता है जो रस की अवस्था तक पहुँचता है। साहित्य में वे मूल तत्व जो मूलतः मनुष्यों के मन में प्रायः सदा निहित रहते और कुछ विशिष्ट अवसरों पर अथवा कुछ विशिष्ट कारणों से स्पष्ट रूप से प्रकट होते हैं। काव्य या नाटक में एक स्थायी भाव शुरू से आख़िरी तक होता है। स्थायी भावों की संख्या 9 मानी गई है। स्थायी भाव ही रस का आधार है। एक रस के मूल में एक स्थायी भाव रहता है। अतएव रसों की संख्या भी 9 हैं, जिन्हें नवरस कहा जाता है।मूलत: नवरस ही माने जाते हैं। बाद के आचार्यों ने 2 और भावों वात्सल्य और भगवद विषयक रति को स्थायी भाव की मान्यता दी है। इस प्रकार स्थायी भावों की संख्या 11 तक पहुँच जाती है और तदनुरूप रसों की संख्या भी 11 तक पहुँच जाती है।

शृंगार रस में ही वात्सल्य और भक्ति रस भी शामिल हैं।

	रस	स्थायी भाव
1	शृंगार	रति
2	हास्य	हास
3	करुण	शोक
4	रौद्र	क्रोध

5	वीर	उत्साह
6	भयानक	भय
7	वीभत्स	जुगुप्सा
8	अद्भुत	विस्मय
9	शांत	निर्वेद
10	वात्सल्य	वत्सलता
11	भक्ति रस	अनुराग

विभाव

साहित्य में, वह कारण जो आश्रय में भाव जाग्रत या उद्दीप्त करता हो। स्थायी भावों के उद्बोधक कारण को विभाव कहते हैं। **विभाव दो प्रकार के होते हैं-**

i. आलंबन विभाव

ii. उद्दीपन विभाव

आलंबन विभाव

जिसका आलंबन या सहारा पाकर स्थायी भाव जगते हैं, आलंबन विभाव कहलाता है। आलंबन विभाव के दो पक्ष होते हैं:-

i. आश्रयालंबन

ii. विषयालंबन

जिसके मन में भाव जगे वह आश्रयालंबन तथा जिसके प्रति या जिसके कारण मन में भाव जगे वह विषयालंबन कहलाता है। उदाहरण : यदि राम के मन में सीता के प्रति प्रेम का भाव जगता है तो राम आश्रय होंगे और सीता विषय।

उद्दीपन विभाव

जिन वस्तुओं या परिस्थितियों को देखकर स्थायी भाव उद्दीप्त होने लगता है उद्दीपन विभाव कहलाता है। जैसे- चाँदनी, कोकिल कूजन, एकांत स्थल, रमणीक उद्यान आदि।

अनुभाव

वे गुण और क्रियाएँ जिनसे रस का बोध हो। मनोगत भाव को व्यक्त करने वाले शरीर-विकार अनुभाव कहलाते हैं। अनुभावों की संख्या 8 मानी गई है-

(1) स्तंभ

(2) स्वेद

(3) रोमांच

(4) स्वर-भंग

(5) कम्प

(6) विवर्णता (रंगहीनता)

(7) अश्रु

(8) प्रलय (संज्ञाहीनता/निश्चेष्टता) ।

संचारी या व्यभिचारी भाव

मन में संचरण करने वाले (आने-जाने वाले) भावों को संचारी या व्यभिचारी भाव कहते हैं, ये भाव पानी के बुलबुलों के सामान उठते और विलीन हो जाने वाले भाव होते हैं। संचारी भावों की कुल संख्या 33 मानी गई है ।

विशेष –

(1) शृंगार रस को 'रसराज/ रसपति' कहा जाता है।
(2) नाटक में 8 ही रस माने जाते है क्योंकि वहां शांत को रस में नहीं गिना जाता। भरत मुनि ने रसों की संख्या 8 माना है।
(3) शृंगार रस के व्यापक दायरे में वत्सल रस व भक्ति रस आ जाते हैं इसलिए रसों की संख्या 9 ही मानना ज्यादा उपयुक्त है।